रविवार, दिनाँक 25-06-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

आज सब सजनों ने समझदारी से काम लेना है ताकि आप अपना आत्म-निरीक्षण करते हुए इस बात को समझ सको कि क्योंकर इतने साल सत्संग में आने के बावज़ूद भी आप मानवता अनुकूल नहीं ढल पाए? क्योंकर पालना के दौरान प्राप्त नकारात्मक शारीरिक भाव-स्वभावों यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से छुटकारा नहीं पा पाए? बचपन गया, युवा-अवस्था गई, अब प्रौढ़ अवस्था या वृद्ध अवस्था में चल रहे हैं तो क्योंकर इतनी आयु व्यतीत होने के बावज़ूद भी आप अपने आप को सम्भाल नहीं पाए?

''मौन''।

आपके मौन से स्पष्ट होता है कि आप इतनी मज़बूती से शारीरिक भाव-स्वभाव अपना बैठे हो कि अब आत्मीयता-युक्त भाव-स्वभावों को अपनाना दुष्कर प्रतीत हो रहा है। आशय यह है कि पालना के दौरान अपनाए शारीरिक भाव-स्वभाव इतना जोर मार रहे हैं कि अन्दरुनी व बैहरुनी दोनों वृत्तियों में नकारात्मक वातावरण बनाए रखने के लिए आप विवश हो गये हो। इस बात का परिचय आप खुद आत्म-निरीक्षण करके ले सकते हो यानि इस आत्म-निरीक्षण क्रिया द्वारा जान सकते हो कि कितना आपके अन्दर सत्य है और कितना झूठ है? कितना काम है व कितनी निष्कामता है? कितना क्रोध है व कितनी शान्ति है? हम पूछते हैं कि इतनी बार सत्संग में विचारयुक्त प्रसंग सुनने के बाद भी आपके मनोभाव क्योंकर नहीं बदले और आप शारीरिक भाव-स्वभावों में अटके बैठे हो? जानो यही नकारात्मक भाव-स्वभाव आपके जीवन को निरर्थकता की ओर बढ़ा रहे हैं और जीवन की एकता भंग कर आपके मन-मस्तिष्क व परिवार में अशान्ति के वातावरण का निर्माण कर रहे हैं। इसी अशान्ति के कारण दुःख भरा जीवन जी रहे हो और सत्सग में आने के बावज़ूद भी दुर्मति को प्राप्त हुए पड़े हो।

यहाँ हम आप सबसे कहना चाहते हैं कि ऐसे दुर्मतियों के पुनः उद्धार व सुधार हेतु सत्संग द्वारा विचार देने का प्रयास किया जाता है। परन्तु यहाँ प्रश्न यह उठता है कि इन विचारों को प्राप्त करने के बावज़ूद भी बुराई छोड़ अच्छाई को धारणे में यानि अच्छे स्वभावों में ढल व सतवादी बन एकता व एक-अवस्था में आने के प्रति आप क्योंकर कमज़ोर पड़ जाते हो?

सजनों यह विचारने की बात है और आज इसी पर चर्चा होनी है। सो आज आपको इसी विषय में अपने जीवन परिणाम को जानने हेतु निर्णय लेना है ताकि अन्त समय आप किसी पर दोषारोपण न कर सको। याद रखो हर इन्सान को अपनी करनी खुद भुगतनी पड़ती है। अतः जब तक अपनी नकारात्मक करनी में बदलाव नहीं लाओगे यानि अपने स्वभावों पर अंकुश रखने में सफल नहीं हो पाओगे और आपका ख़्याल स्थिरता से अन्तर्मुखी नहीं रह पाएगा, तब तक नश्वरता/जन्म-मरण से छुटकारा नहीं पा पाओगे। किसी को भी ऐसी पीड़ा न भुगतनी पड़े इस हेतु अपने भाव-स्वभावों में बदलाव लाओ और अपने मन-वचन-कर्म द्वारा सुख बाँटना शुरु करो। किसी को किसी विध् भी दुःख न पहुँचाओ यानि पीड़ा न बाँटो। याद रखो यह समय के अनुकूल कुदरत की चेतावनी है।

अगर हम अपने सजन आप हैं तो हमें अपने व सबके प्रति सजनता दिखानी होगी। इसके विपरीत अगर हम अपने सजन नहीं हैं यानि अपने प्रति सजनता का भाव अपनाकर आत्म-सुधार नहीं कर पा रहे तो यह खुद अपना वैरी आप बनने की बात होगी। याद रखो जो अपना वैरी होता है वह अपने परिवार का व कुल समाज का भी वैरी होता है क्योंकि वैर-भाव से उसकी कभी निवृत्ति नहीं हो पाती। यह अपने जीवन का घातक परिणाम प्राप्त करने की बात होती है। इस दुर्गति से बचने हेतु हमें अपने जीवन में सत्संग की महानता और महत्ता को समझना है। साथ ही साथ इस बात का भी जायजा लेना है कि मैं आज तक सत्संग में आने के बावज़ूद सदाचारी बनने में कहाँ और कैसे कमज़ोर रहा ताकि आत्म-नियन्त्रण द्वारा आत्म-सुधार कर आप अपने अन्तर्घट से असत्य का विनाश करने में कामयाब हो सको और हृदय सचखण्ड बन जाए। इस तरह आपको अपनी यथार्थ शक्ति की प्रतीति हो जाएगी।

सजनों जान लो कि आज यदि आत्म-सुधार का यह मौका भी आपने खो दिया तो हम कुछ नहीं कह सकते कि आपके जीवन का अन्त परिणाम कितना कष्टदायक होगा। सो अपने जीवन का निश्चय अब आपने खुद लेना है कि आप असत्य धारणकर मंझधार में डूबना चाहते हो या फिर सत्य को धारण कर हल्के-फुल्के हो भवसागर से पार होना चाहते हो। यहाँ जान लो कि जो असत्य को धारता है, वह भवसागर से कभी भी पार नहीं उतर सकता क्योंकि असत्य यानि झूठ भारी होता है। सो ऐसे इन्सान का भवसागर में डूबना

सुनिश्चित होता है। ऐसा न हो इसके लिए सजनों आपके ख़्याल को सतत् रूप से सत्य का संग करना है और सत्यनिष्ठा से जीवनयापन करना है। आशय यह है कि अन्तर्मुखी होकर सत्य की तरफ ही अपने ख़्याल को मोड़ना है और चेतन अवस्था में आ जाना है। जानो यदि चेतन अवस्था में आ गये तो फिर आपको कोई भी भरमा नहीं सकेगा यानि उलझाकर कुरस्ते पर चढ़ा नहीं सकेगा क्योंकि तब आप बौद्धिक रूप से शक्तिशाली हो जाओगे और उच्च-बुद्धि, उच्च-ख़्याल हो जाओगे। उच्च-बुद्धि, उच्च-ख़्याल व्यक्ति ही परोपकार प्रवृत्ति में ढल सकता है व आनन्दमय जीवन जी सकता है। इस तरह आपका सब दुःखों से छुटकारा हो जाएगा। सो यदि आप भी जीवन के इन तमाम दुःखों से छुटकारा पाना चाहते हो तो बड़े ध्यान से आज का सत्संग सुनना और साथ ही साथ यह निर्णय भी लेना कि तूं-मैं का सवाल उठाकर आप अपना जीवन निन्दा-चुगली, लड़ाई-झगड़े में व्यतीत करना चाहते हो या फिर जीव-ब्रह्म का ज्ञान प्राप्तकर एकरूपता व एकरसता से जीवन जीना चाहते हो?

सजनों यदि आपका उत्तर है कि आप परमार्थ अनुसार जीवन जीना चाहते हैं तो फिर सत्संग का जो सूक्ष्म व व्यापक अर्थ है उसको जानो और जो भी शब्द ब्रह्म रूपी विचारों का प्रवाह सत्संग में चलता है, उसे आत्मसात कर जीवन-व्यवहार के दौरान उसका प्रयोग करो। जानते हो ऐसा करने से क्या होगा? - ऐसा करने से टूटे हुए दिल व परिवार मिल जाएँगे। सो अगर अपने जीवन का परिणाम भी यही चाहते हो और आनन्दमय जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो फिर अपने अन्तर्घट को सतयुग बनाओ। यहाँ जानो कि समय का खेल सर्गुण में ही चलता है, निर्गुण में नहीं। इसलिए शास्त्र की नीति है कि अपने ख़्याल को निर्गुण घर में साधे रखते हुए सर्गुण में विचरो। याद रखो, निर्गुण में न सतोगुण है, न रजोगुण है और न ही तमोगुण है यानि यह गुणातीत अवस्था है और यहाँ आद् सत्य सदा प्रकाशित रहता है। अतः जब हम निर्गुण अवस्था में सधे रहते हैं तो सत्य हमारे ख़्याल में उतरता है और उसी का वर्त-वर्ताव हमारे मन-वचन-कर्म द्वारा होता है। जब सत्य का वर्त-वर्ताव होता है तो कर्म - कर्म नहीं कहलाता अपितु निष्काम हो जाता है। निष्कामी ही कंचन होता है और ऐसा कंचन इन्सान बनने हेतु ही सत्संग में आना आवश्यक होता है। सो यहाँ सबने विचार करना है कि क्या इतने साल सत्संग में आने पर भी हम या हमारे परिवार कंचन बनने के प्रयास में सफल हो पाए? यह विचार करने की बात है। इस विचार उपरान्त आपको समझ आयेगा कि हमारे अन्दर हर बात में ''मैं'' है और हम उस मैं को बदलना नहीं चाहते। यही मैं हमें अपने अन्दर स्वाभाविक तबदीली नहीं लाने देती। यहाँ

हम पूछते हैं कि हम यह मानव चोला प्राप्त कर क्योंकर इसे व्यर्थ गँवाने की भूल कर बैठते हैं? सजनों हम प्रार्थना करते हैं कि ऐसा मत करो और समय अनुकूल बदलाव को स्वीकारो। आशय यह है कि यदि जीवन नहीं बना सकते तो कम से कम सतवस्तु में तो आ जाओ। इस सन्दर्भ में शास्त्र कह रहा हैः-

हटे रात उमस्या वाली सतवस्तु पाया ए फेरा

सर्गुण विच सतवस्तु राहवे सच खंड हमारा डेरा

सो सफलता की ओर बढ़ने के लिए तैयार हो जाओ। इसी सन्दर्भ में अब भजन सुनोः-

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल, महाबीर जी दे नाल ओ रघुनाथ जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, प्रेम वैराग साँवले चरणां दा प्यार।

साँवले चरणां दा प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, साँवले चरणां दी प्रीत रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सम सन्तोष सत शास्त्र दा विचार।

सत शास्त्र दा विचार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, शब्द सुरति दा मिलाप रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सिया राम लक्ष्मण संग होवन बलधार।

संग होवन बलधार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, बनिया रहे दासियां दा सत्संग नाल प्यार।

सत्संग नाल प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

मैं दासी तुआडे चरणां तों वारी, संगतां लावन मेरे बलधारी।

अंजनी लाल अग्गूं साडी नमस्कार, अग्गूं साडी नमस्कार ।

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

यहाँ सजनों हमें विचार करना है कि हम किस सत्संग सभा के सदस्य हैं?

''सजन श्री शहनशाह महाबीर सत्संग सभा के''।

तो क्या हमारे मन में अपने परमार्थी पिता सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के प्रति निष्काम प्रेम है या नहीं?

''मौन''।

क्या उनके द्वारे पर होने के नाते अब तक आत्मोद्धार करने के काबिल बने हैं या नहीं? इस सन्दर्भ में सच्चेपातशाह जी जीवन का उत्तम परिणाम प्राप्त करने हेतु सबकी भलाई के निमित्त सारे सत्संगियों को कहते हैं कि मेरे मन में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के साथ लगन लग गई है, इसीलिए मेरे लिए उनकी विचारधारा यानि उनके द्वारा दर्शाया जीवन का विचारयुक्त रास्ता अपनाना सहज हो गया है। अतः मेरा उनके साथ संग बना रहता है। इसके विपरीत जिसका संग संसार के साथ होता है, वह उनके हुक्म की पालना कैसे कर सकता है? इस तथ्य को समझते हुए सर्वप्रथम हमने यह सुनिश्चित करना है कि हमने किसके संग अपने ख़्याल का नाता जोड़ना है। फिर जब प्रभु संग सच्चेपातशाह जी का नाता जुड़ गया तो उनकी सुरत ने उनसे केवल यही माँगा कि हे प्रभु ! मुझे अपनी आत्मा में सुशोभित परमात्मा का साक्षात्कार करा दो यानि जो परमतत्त्व मेरे जीवन का, मेरे वास्तविक स्वरूप का आधार है उसका मुझे दर्शन करा दो ताकि मैं जान जाऊँ कि मैं किस सर्वोच्च ब्रह्म का अंश हूँ। यह जानने के पश्चात तो निश्चित रूप से मेरी शान बन जाएगी और मैं उनसे सब कुछ प्राप्त कर लूँगी क्योंकि वही तो वे सर्व महान दाता हैं जो कुल ब्रह्माण्ड की पालना करते हैं। इससे ज्ञात होता है कि हमारा काम लेना नहीं अपितु अपने जीवन को प्रभु के निमित्त समर्पित कर वहाँ से जो कुछ प्राप्त हो, उसे सर्व में बाँटना है यानि परोपकार कमाना है। जानो सजनों यह परोपकार प्रवृत्ति में ढलने की बात है।

इसके अतिरिक्त इस भजन के अन्तर्गत सच्चेपातशाह जी सारे सत्संगियों को आवाहन देते हुए कहते हैं कि हे सजनों, अगर चाहते हो कि आपके जीवन का परिणाम भी मोक्ष हो तो फिर जिस आदि, अनादि, प्रमादि सत्य की इस भजन में सूक्ष्मतः व्याख्या की गई है, उसका संग कर सत्यनिष्ठा से जीवन जिओ। जानो यही जीवन की वास्तविकता है अतः हमें इसी काबिल बनना है। यहाँ हम पूछते हैं कि जब हमने इस काबिल बनना था तो फिर क्योंकर नालायकी कर्म कमाया, क्योंकर अपने साथ वैर किया? इतने साल यह सुनते-सुनते कि असत्य छोड़ो, सत्य धारो, हम मूर्खों की तरह क्योंकर मनमत के पँजे में फँसे रहे? यह बहुत ही शर्मनाक व दर्दनाक बात है। मुश्किल से मिले इस अनमोल जीवन रूपी मौके को खुद ही गँवाने की बात है। सजनों यदि कभी एकान्त में बैठकर अपनी इस कमज़ोरी पर नज़र डालोगे और इसके दुष्परिणाम को समझने का यत्न करोगे तो निश्चित रूप से ही तड़फ उठोगे। हो सकता है फिर आपकी बुद्धि पलटा खा जाए। सो आज की बातचीत द्वारा कुदरत फिर आपको एक मौका दे रही है अतः विचार कर लेना। आशय यह है कि यदि चाहते हो कि आपका मानव रूप में इस संसार में आने का परिणाम निरर्थक न हो तो उसके लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित आदि, अनादि व प्रमादि सत्य का चिन्तन, मनन व विवेचन करके उसे धारण करना और इस तरह अन्तर्घट की सफाई कर तद्नुकूल ही अपना व्यवहार दर्शाना। यहाँ याद रखो कि जितने भी शारीरिक स्वभाव हैं, वह बाहर से यानि संसार से ही आये हैं अतः उन्हें बाहर ही निकाल फैंको। इस तरह अपने यथार्थ गुण व धर्म को धारकर मानवता के प्रतीक बन जाओ व सतयुगी इन्सान कहलाओ। इस तरह अपनी सुन्दर बनत बना मोक्ष की ओर चल पड़ो यानि सर्गुण-निर्गुण के खेल खेलते हुए निर्वाण यानि शून्य में प्रवेश कर जाओ। याद रखो जो भी दृष्टिपात हो रहा है, शून्य से वह सब दिखता है क्योंकि वहीं से हर वस्तु का बीज आता है यानि वहीं से चेतन शक्ति आती है। सो उस शून्य स्थान से आप कुल ब्रह्माण्ड पर नज़र रख सकते हो। कहने का अर्थ यह है कि सतवस्तु की चाल चल अपने व अपनों के सजन बनो। इस हेतु दुनियावी भाव-स्वभाव त्याग कर शास्त्र विहित भाव-स्वभावों को अपनाओ। इसके लिए मेहनत करो, खुद पर सतर्क रह अंकुश रखो और सबके प्रति अपना कर्त्तव्य हँसकर निभाओ। अब सबने क्या निश्चय लिया हैः-

बनिया रहे दासियां दा सत्संग नाल प्यार

इस सन्दर्भ में सच्चेपातशाह जी कहते हैंः-

असत्य नूं भैंणा छोड़ के सत्य नूं लवो धार

इस तरह सजनों सतवादी बन एकता, एक-अवस्था में आ जाओ। इसी सन्दर्भ में अब सब सत्संग का महत्त्व सुनोः-

सत्संग में आने की जीवनोपयोगी महत्ता

सजनों विचार करो कि आपको सत्संग में आते हुए कितने वर्ष व्यतीत हो गए? सत्संग में निरंतर आने के बावजूद भी आत्मोद्धार हेतु आप क्यों कर अब तक अपना स्वाभाविक स्वरूप बदल यानि शारीरिक भाव-स्वभाव छोड़ व आत्मीयता युक्त भाव-स्वभाव अपना कर, आत्मसुधार नहीं कर पाए ? जानो यह भूल अत्यन्त चिंता का विषय है क्योंकि यह अपने आप में मनमुख बने रह, अक्लहीनता के कारण, जीवन की बाज़ी हारने जैसी निंदनीय बात है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए आपको अपने जीवन के यथार्थ लक्ष्य प्राप्ति के प्रति पुनः सचेत करने हेतु, कुदरत आपको एक और अंतिम मौका देना चाहती है, जिसे कबूल करना ही, हर सजन के व्यक्तिगत हित में है। अगर कर्मानुसार कई योनियों के उपरांत प्राप्त इस अनमोल मानव चोले का पूरा लाभ उठा, अभी भी मन में मोक्ष प्राप्ति की इच्छा है तो आज की बात ध्यान से सुनना व समझना और अविलम्ब आत्मसुधार करने के प्रति तत्पर हो जाना।

सजनों इसी परिप्रेक्ष्य में आओ अब सत्संग में आने की जीवनोपयोगी महानता व महत्त्व को समझते हैंः-

जानो कि कलियुग में सत्संग द्वारा ही, कुदरती वेद-शास्त्रों में वर्णित शब्द ब्रह्म विचारों के अध्ययन, चिंतन, मनन व विवेचन की गहनता से बात होती है जिसे धर्म अथवा अध्यात्म सम्बन्धी भी कहते हैं। यही नहीं इसी व्यवस्था द्वारा अपने बहिर्मुखी मन को अंतर्मुखी करने हेतु, सुरति शब्द अर्थात् ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल निरन्तर साधे रखते हुए, अपने हृदय सहित रोम-रोम को समरस प्रकाशित अवस्था में साधे रखने का युक्तिसंगत शिक्षण भी दिया जाता है। इस शिक्षण से व्यक्ति का मानसिक, चारित्रिक व आध्यात्मिक विकास होता है तथा आत्मेश्वर के प्रति विशेष श्रद्धा, प्रेम और विश्वास के अतिरिक्त, सभी के प्रति स्नेह का भाव यानि सजन-भाव पनपता है। इसी के साथ अपनाए विकारों के

कारणों पर विचार करने का मौका मिलता है और आत्मनियन्त्रण द्वारा आत्मसुधार कर, मनुष्यत्व में बने रहने का सुअवसर भी प्राप्त होता है। परिणामतः मानव के हृदय में सत्य-धर्म का साम्राज्य स्थापित होते ही अज्ञान अंधकार का नाश हो जाता है जो अपने आप में अंतर्घट में सतयुग छा जाने जैसी मंगलकारी बात होती है। सजनों सत्संग की इस अद्‌भुत महानता को समझते हुए पुनः होश में आओ और जीवन की जो घड़ियाँ शेष बची हैं, उस समय को सार्थक बनाने हेतु अपने परिवारजनों व सामाजिक सदस्यों के साथ स्वार्थपरता की बातें करना यकदम छोड़ दो। इस प्रकार परस्पर संसारी बाते करने के स्थान पर अपनी दिनचर्या का अधिक से अधिक समय, धर्म अर्थात् अध्यात्म सम्बन्धी चर्चा में लगाओ और ए विध् सबके कुसंगी ख़्याल को सजन व संगी बना, अपने मन को संकल्प रहित अवस्था में निरन्तर साधे रखने का पुरुषार्थ दिखा, परोपकार कमाओ और परमात्मा के सुपुत्र कहलाओ।

सत्संग की महत्ता बताते हुए सजनों सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि जीवन उसी का सुखी हो सकता है जिसको प्रतिदिन सत् संग मिलता रहे। सत् संग के लिए ही तो उन्होंने हमें सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ अनमोल दात के रूप में प्रदान किया है। इसी का मनन व अनुशीलन करने से हमारे मन के भाव गूढ़ व आचार-विचार उच्च हो सकते हैं। आगे सच्चेपातशाह जी सत्संग की आवश्यकता क्यों है, इस विषय में हमें स्पष्टता देते हुए समझाते हैं कि सत्संग पर आने से महाराज जी के वचन सुनने को मिलते हैं। सच्चे पातशाह जी ने उदाहरण दिया है, जब किसी साईकल की फूक निकल जाती है, तो वह नहीं चलता, फिर फूक भर दी जाती है। इसी प्रकार सत्संग पर भी सजन में फूक भरी जाती है। कुछ नियम से ज़िन्दगी जीना आ जाता है। इसी संदर्भ में सच्चेपातशाह जी आगे कहते हैं:-

सत्संग में भी नियमों का पालन करना चाहिए। जैसे किः-

१ सभा में आँखें बन्द करके बैठना चाहिए।

२ सत्संग में आते-जाते वक्त ‘घरों नाम चलैंदे आओ, नाम चलैंदे जाओ’।

३ सत्संग में जो भी महाराज जी के वचन सुनो, फिर विचारो, फिर चल पवो। इस तरह

‘जांचो,तोलो, तुल खलोवो।’

४ सत्संग में

'बात किसे दी न करियो, न करियो किसे दी गल

सत्संग में मत बोलियो न मचाईयो हलचल'

५ सत्संग के दौरान चेहरे पर मुस्कुराहट होनी चाहिए। जब भी सभा में बैठो, मुस्कुराहट में बैठो। पहले यह बनावटी होगी। धीरे-धीरे आदत पड़ जाएगी, फिर हर समय मुख खिड़िया नज़र आवेगा। फिर वही वातावरण घर में बनाओ, तो लोक-परलोक संवर जाएगा। इसी संदर्भ में सजनों सच्चेपातशाह जी आगे समझाते हैं कि सत्संग में जो वचन सुने हैं, घर में रहते हुए यानि गृहस्थ आश्रम में रहते हुए उन पर अमल फरमाते हुए बस यह करो.....क्या?

ख्याल अक्षर वल, ध्यान प्रभु वल

अर्थात् मूलमन्त्र शब्द को गुरु मान कर, जगत के समस्त कार्यव्यवहार करते हुए उसी के अजपा जाप द्वारा, अपना ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल जोड़े रखो। यही मन को प्रभु में लीन रखने की बात है व सर्वोत्तम सत् संगति है। इस सत् संगति के प्रभाव से हृदय विदित आत्मज्ञान का बोध होगा और उस सत्य ज्ञान धारणा से स्वतः संकल्प कुसंगी, सजन और संगी हो जाएगा। यही नहीं फिर धीरे-धीरे जब उस आत्मज्ञान को मन-वचन-कर्म द्वारा आत्मसात् कर पूर्णतः संसारी व शास्त्र दोनों प्रकार के कनरस से आज़ाद हो जाओगे और संकल्प पर पूरी तरह फ़तह पा लोगे तो स्वभावों का घटता-बढ़ता टैम्प्रेचर भी सम हो जाएगा। यह होगा समभाव नज़रों में कर समदृष्टि हो जाना।

अतः सजनों सच्चेपातशाह जी की युक्ति प्रवान कर अर्थात् नाम-ध्यान में रहते हुए अपने आप की पहचान करो और अपना जीवन बनाओ। सारतः सजनों सच्चेपातशाह जी के इन वचनों को सदा याद रखना...क्या?

'अच्छे संग तरे, मंदे संग डूबे'

यानि अगर संकल्प कुसंगी का संग किया और मनमत पर चल दिए तो डूब जाओगे और यदि प्रभु का संग किया तो तर जाओगे।

यह सब जानने के पश्चात् सजनों आपको भली-भांति समझ आ गया होगा कि असत्य का संग छोड़ सत्य का संग प्राप्त कर, सत्-वादी बनने हेतु मन में त्याग व सेवा भाव का होना आवश्यक है। यहाँ जानो कि त्याग का शाब्दिक अर्थ है किसी वस्तु पर से अपना अधिकार या उसके प्रति अपनी आसक्ति और दायित्व समाप्त करने की क्रिया या भाव। त्याग सांसारिक भोगों में लिप्त न रहने की क्रिया/भाव है। यह ऊँचे उद्देश्य के लिए अपना सुख-वैभव, स्वार्थ और हितों को छोड़ देने की क्रिया है। अन्य शब्दों में त्याग ग्रहण के विपरीत कर्म है अथवा वैराग भाव है। इस भाव को आत्मसात् करने हेतु माया का अथवा विकार-विकृतियों का छोड़ना आवश्यक है। ऐसा करने पर ही मन में सकारात्मक शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर, उन्हें युक्तिसंगत जीवन व्यवहार में लाने की कला में निपुण बन सकते हो।

आगे जानो कि यहाँ सेवा से आशय पालन-पोषण आदि के लिए अथवा सार्वजनिक हित के लिए, किसी कार्य की प्रक्रिया के अंतर्गत या किसी की उन्नति या भलाई आदि के लिए किए जाने वाले कार्य से है। हमें सेवा भाव से अपने अंतर्मन की सफ़ाई करने के स्वभाव में ढलना है और इस तरह अपने हृदय को सचखंड बना इस मानव रूपी चोले की यथार्थता को समझना है। इस तरह हमें यथार्थतापूर्ण सत्यनिष्ठा से, धर्म संगत निष्पाप जीवन जीने के योग्य बन अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य मोक्ष को सिद्ध करना है।

अतैव सजनों यह सब सुनने समझने के पश्चात्, अगर लेश मात्र भी अपने प्रति सज्जनता का भाव है और अभी भी आत्मसुधार कर आत्मोद्धार करना चाहते हो तो समय रहते ही परमेश्वर के निमित्त आत्मसमर्पण कर अपनी भूल का सुधार करने के प्रयास में रत हो जाओ यानि आत्मसंस्कारी बन जाओ। कहने का तात्पर्य यह है कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित युक्ति अनुसार आत्मा का दृष्टा बन, शरीरों से ऊपर उठ अपनी अजरता-अमरता को जान व पहचान लो। जानो यह अपने आप में आत्म साक्षात्कार कर यानि आत्मा-परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर एकरूप हो जाने जैसी सर्व महान बात है क्योंकि यही मोक्ष है।

अंत में सजनों हम तो यही कहेंगे कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते अपने आप को सौभाग्यशाली मानो क्योंकि अभी भी वे शहनशाह हम जैसे दुर्मतियों को युक्ति देकर सुमति में लाने का प्रयास कर रहे हैं। सुनिश्चित रूप से उन द्वारा प्रदत्त युक्ति प्रवान कर हम दुर्गति से सुगति को प्राप्त हो सकते हैं यानि सर्वोच्च महान ब्रह्म पद प्राप्त कर सकते हैं और परमधाम पहुँच विश्राम को पा सकते हैं।

सजनों सुनिश्चित रूप से ऐसा करना चाहते हो तो फिर सब मिल कर बोलोः-

जीतेंगे जीतेंगे हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे

हनुमान जी दे वचनां ते चल चल कर

हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे, हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे

जीतेंगे जीतेंगे हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे

आप सब के द्वारा ऐसी उत्साह भरी बात सुन कर बहुत अच्छा लगा इसलिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित युक्ति अनुसार सबसे प्रार्थना है कि अब अविलम्ब बैरूनी वृत्ति को छोड़ अन्दरूनी वृत्ति को धारण करने में जुट जाओ और समभाव समदृष्टि के सबक़ अनुसार सर्गुण व निर्गुण समकर जानो। अगर यह सर्वोपरि बदलाव मंजूर है तो आओ सब मिलकर बोलते हैंः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख की शाख)

फिर समभाव समदृष्टि वाले, सर्गुण निर्गुण एक निगाह आया

और एक ही सुहाया।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना सर्गुण निर्गुण एक निगाह आया

और एक ही सुहाया।।

सर्गुण निर्गुण ओहदी सूरत है जे इलाही।

कैसी है सुन्दरताई ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना।।

सर्गुण निर्गुण में कैसी ओहदी है रहणी बहणी।

रौशनी है सर्व सबाई ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना।

एक ही मानो एक ही जानो सजनों एक ही करो प्रवान।

इक इक ही सारा जग दिस्से इक है ओ सर्व महान,

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना।।

सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय।

सजन पवनसुत हनुमान जी की जय।

सजन उमापति महादेव जी की जय।।

सजनों यह सब सुनने समझने के पश्चात हम तो यही कहेंगे कि अब अपने जन्म के वैरी नहीं अपितु सजन बनना। चाहे जितनी भी उम्र हो गई हो घबराना नहीं अपितु हिम्मत के साथ आगे बढ़ना।

आप सब ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।